

पद १६

(राग: यमन - ताल: भजनी)

ये धरती ओ आकाश। जल वायु अग्नि तत्व हैं पांच॥ध्रु०॥ घर
मेरा ये संसार। तल है धरती छत आकाश॥१॥ चहुँ वेदों की
दीवार। अठरा खिडकी छः हैं द्वार॥२॥ जल वायु हैं आहार।
अग्नि से जीवन साकार॥३॥ काम मेरे इक सौ आठ प्रभु सेवा में
रत दिन रात॥४॥ सिद्ध कहे ऊपर का सार। जो जाने सो होगा
पार॥५॥